بسم الله الرحمن الرحيم

لا اله الا الله محمد رسول الله

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[स०] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 26
Issue - 11

राह-ए-ईमान

नवंबर
2024 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
खान मामून अहमद
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (इत्मामुल हुज्जत) 4
5. सम्पादकीय 6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 27.09.2024) 8
7. मिर्ज़ा साहब के एक कट्टर विरोधी की आपसे मिलने के बाद राय 12
8. पवित्र क़ुर्आन के बारे में ऐतराज़ों के संक्षिप्त उत्तर 23
9. हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कुछ हदीसें 26

☆ ☆ ☆

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

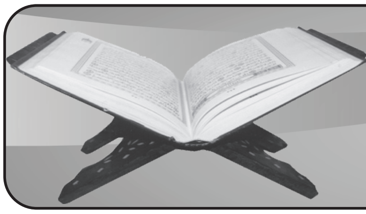

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

क़ुरआन की आयत का अनुवाद:- 70-और हम ने उसे (अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम को) कविता कहना नहीं सिखाया और न यह काम उस की शान के लिए उचित ही था। यह क़ुर्आन तो केवल एक उपदेश है और बार-बार पढ़ने वाली किताब है जो (साथ प्रमाण भी) बताती है। 71-ताकि जो सजीव है उसे सावधान कर दे और इन्कार करने वालों के बारे में अल्लाह का निर्णय पूरा हो जाए। 72-क्या वे नहीं देखते कि हम ने उन के लिए अपनी विशेष शक्ति से चौपाए बनाए हैं और वे उन के स्वामी हैं। 73-और हम ने उन चौपायों को उन के अधीन कर दिया है। अतएव उन में से कुछ पर तो वे सवार होते हैं और कुछ को वे खाते हैं। 74-और उन से भी अनेक प्रकार के लाभ उठाते हैं तथा वे उन से पीने की सामग्री भी प्राप्त करते हैं। क्या वे धन्यवाद नहीं करते? 75-और उन लोगों ने अल्लाह के सिवा कुछ और उपास्य बना रखे हैं कि कदाचित किसी समय उन की सहायता की जाए। 76-वे (उपास्य) उन की कोई सहायता नहीं कर सकते, बल्कि वे उलटा उन के विरुद्ध मिल कर एक सेना के रूप में इकट्ठे हो कर गवाही देंगे।

(सूरह यासीन : 70-76)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद: हज़रत अबू ज़र वर्णन करते हैं कि बनू सलमा ने तय किया कि वह मस्जिद नबवी के नज़दीक रहना आरंभ करेंगे। जब यह बात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहुंची तो आपने उन्हें फरमाया- मुझे यह पता चला है कि तुम मेरी मस्जिद के पास निकटता में आकर बसना चाहते हो। उन्होंने कहा- हाँ या रसूलल्लाह! हम ऐसा इरादा कर रहे हैं। आपने फरमाया- हे बनी सलमा! तुम अपने उन्हीं घरों में रहो तुम्हें उन कदमों का भी ईनाम (सवाब) प्राप्त होगा जो मस्जिद की ओर आते हुए तुम्हारे उठते हैं। (मुस्लिम कुताबुस्सलात)

नोट: बनू सलमा बड़ा बहादुर कबीला था और मदीना के बाहरी इलाके में रहता था और एक तरह से इस से मदीना की रक्षा की ज़िम्मेदारी इसी कबीला पर थी। उनके वहां से चले आने से मदीना की इस तरफ की सुरक्षा खतरे में पड़ सकती थी। इसलिए आप ने उन्हें वहीं रहने का इरशाद फरमाया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

केवल रसूलों (अवतारों) के इन्कार से इस लोक में दण्ड नहीं मिलता

यह बात भी याद रखने योग्य है कि मक्का वालों ने केवल आपको झुठलाया ही नहीं था। झुठलाना जो केवल सादगी और अज्ञानता के कारण होता है उसकी सज़ा अल्लाह तआला इस लोक में नहीं देता। लेकिन जब झुठलाने वाला सज्जनता और मानवता की सीमाएँ लाँघकर धृष्टता और गाली-गलौज पर उतर आता है और आरोप लगाता है और आरोपों की हद तक नहीं रहता बल्कि हर प्रकार के दु:ख और कष्ट पहुँचाने के षडयन्त्र रचता है और फिर उसको उस हद तक पहुँचाता है कि उसकी कोई सीमा नहीं। तो अल्लाह तआला का स्वाभिमान जोश में आता है और अपने भेजे हुए रसूलों (अवतारों) के लिए वह उन दुष्टों और पापियों का सर्वनाश कर देता है। जैसे कि हज़रत नूह और हज़रत लूत इत्यादि की क़ौमों का सर्वनाश किया। इस प्रकार के अज़ाब (प्रकोप) सदैव उन उपद्रवों और अत्याचारों के कारण से आते हैं जो ख़ुदा के रसूलों (अवतारों) और उनके अनुयायियों पर किए जाते हैं, अन्यथा केवल इन्कार की सज़ा इस लोक में नहीं दी जाती। इसका मामला ख़ुदा के साथ है इसके लिए ख़ुदा ने एक दूसरा लोक रखा है। इस लोक में विरोधियों पर अज़ाब (प्रकोप) जो आते हैं वे इन्कार के कारण नहीं बल्कि कष्ट पहुँचाने के कारण आते हैं, और इन्कार को उपहास और हँसी-ठट्ठे की हद तक पहुँचा देने से आते हैं। यदि गम्भीरता और सुशीलता से यह कहा जावे कि मैंने इस मामले को समझा नहीं इसलिए मुझे इसके स्वीकार करने में संकोच है। तो यह इन्कार इस दुनिया में ख़ुदा के अज़ाब (प्रकोप) को भड़काने वाला नहीं, क्योंकि यह तो केवल सादगी और अज्ञानता के कारण है। मैं सच कहता हूँ कि यदि हज़रत नूह की क़ौम का ऐतराज़ सज्जनतापूर्ण गम्भीरतापूर्वक होता तो अल्लाह तआला सज़ा न देता। सारी क़ौमें अपनी करतूतों के बदले में सज़ा पाती हैं। ख़ुदा तआला ने तो यहाँ तक फ़रमाँ दिया है कि जो लोग क़ुर्आन सुनने के लिए आते हैं उनको अमन की जगह तक पहुँचा दिया जाए चाहे वे विरोधी और इन्कार करने वाले ही क्यों न हों, इसके लिए इस्लाम में जबरदस्ती करने या मजबूर करने का कोई औचित्य नहीं। जैसे कि फ़रमाया:-

لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ (सूर: अल्-बक़र: 257)

लेकिन यदि कोई क़त्ल करे या क़त्ल करने के षडयन्त्र रचे या उपद्रव और दु:ख पहुँचाने की कोशिश करे तो यह आवश्यक है कि वह सज़ा पाए। सिद्धान्त की बात है कि मुजरिमाना हरकतों पर हर एक पकड़ा जाता है। अत: मक्का वाले भी अपनी धृष्टताओं और मुजरिमाना हरकतों के कारण इस योग्य थे कि उन्हें घोर सज़ाएँ दी जातीं और उनसे उस पवित्र स्थान और उसके आसपास को साफ़ कर दिया जाता। लेकिन यह समस्त लोकों के लिए दया और सुशीलता के शिखर पर पहुँचा हुआ नबी पूरी शक्ति और सामर्थ्य के होते हुए भी अपने वधयोग्य दुश्मनों को भी لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ (ला तसरीबा अलैकुमुल यौम्) कहता है कि आज के दिन तुम पर कोई गिरफ़्त नहीं।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द-2)

रूहानी ख़ज़ाइन

पुस्तक: "इत्मामुलहुज्जत" (हुज्जत पूरी करना)

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

मौलवी रुसुल बाबा साहिब अमृतसरी की पुस्तक हयातुल मसीह पर एक और दृष्टि तथा एक हज़ार रुपए इनामी जमा कराने के लिए निवेदन

हम अभी वर्णन कर चुके हैं कि इन दिनों में उपरोक्त लिखित शीर्षक मौलवी साहिब ने एक पुस्तक हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को जीवित सिद्ध करने के लिए लिखी है जिसका नाम "हयातुल मसीह" रखा है। परन्तु यदि यह पूछा जाए कि उन्होंने इतनी मेहनत करने और समय नष्ट करने के बावजूद सिद्ध क्या किया है, तो एक न्यायकर्ता व्यक्ति यही उत्तर देगा कि कुछ नहीं। यदि कथित मौलवी साहिब की नीयत अच्छी होती और उनके इस कारोबार का मूल उद्देश्य वास्तविकता की छान-बीन होता न कि और कुछ तो वह इस पुस्तक के लिखने से पहले पवित्र क़ुर्आन की उन स्पष्ट आयतों को ध्यानपूर्वक पढ़ लेते जिन से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु (वफ़ात) इतनी स्पष्टता के साथ सिद्ध हो रही है कि जैसे वह हमारी आँखों के सामने मृत्यु पा गए और दफ्न किए गए। परन्तु अफ़सोस कि मौलवी साहिब इन सुदृढ़ एवं स्पष्ट आयतों से आंख बंद करके गुज़र गए तथा कुछ अन्य आयतों में परिवर्तन करके और अपनी ओर से उनके साथ अन्य वाक्य मिलाकर लोगों को यह दिखाना चाहा कि जैसे इन आयतों से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के जीवित रहने का पता लगता है। किन्तु यदि मौलवी साहिब की इस झूठ बनाई हुई कार्रवाई से कुछ सिद्ध होता भी है तो केवल यही कि उनके स्वभाव में यहुदियों की विशेषताओं का ख़मीर भी मौजूद है अन्यथा यह किसी भाग्यवान व्यक्ति का कार्य नहीं है कि पवित्र क़ुर्आन की ज़ाहिरी तरकीब को तोड़-मरोड़ कर तथा आयतों के अलग न होने वाले संबंधो को एक-दूसरी से अलग करके तथा कुछ वाक्य अपनी ओर बढ़ाकर कोई बात सिद्ध करना चाहे। यदि इसी बात का नाम सबूत है तो कौन सी बात है जो सिद्ध नहीं हो सकती बल्कि प्रत्येक नास्तिक और बेईमान अपने उद्देश्यों को इसी प्रकार सिद्ध कर सकता है। इस बात को कौन नहीं जानता कि एक किताब के मायने इसी स्थिति में उस किताब के मायने कहलाते हैं कि जब उसका क्रम और वाक्यों के संबंध और आगे-पीछे के प्रसंग सुरक्षित रख कर किए जाएं, परन्तु यदि उस पुस्तक के क्रम को ही अस्त-व्यस्त किया जाए और इबारत के भागों को एक-दूसरे से अलग कर दिया जाए तथा अत्यन्त बहादुरी के साथ कुछ वाक्य अपनी ओर से मिला दिए जाएँ तो ऐसी स्वयं बनाई हुई इबारत से यदि कोई उद्देश्य सिद्ध करना चाहें तो क्या यह वही यहुदियों वाला अक्षरान्तरण (तहरीफ़) नहीं है जिसके कारण पवित्र क़ुर्आन में ऐसे लोग सूअर और बन्दर कहलाए जिन्होंने इसी प्रकार तौरात में नास्तिक्तापूर्ण

कार्रवाइयां की थीं। यदि ऐसे ही बेईमानी वाले परिवर्तनों और अक्षरांतरणों से हज़रत मसीह का जीवित होना सिद्ध हो सकता है तो फिर हमें तो इक़रार करना चाहिए कि हज़रत मसीह का जीवित रहना सिद्ध हो गया, किन्तु इस बात का क्या इलाज कि ख़ुदा तआला ने ऐसे अक्षरांतरण करने वालों का नाम सुअर और बन्दर रखा है। और उन पर लानत भेजी है तथा उनकी संगत से बचने और पृथक रहने का आदेश है। यह बात याद रखनी चाहिए कि हम ख़ुदा के कलाम को किसी आयत में परिवर्तन करने, बदलने, आगे-पीछे करने तथा वाक्य बनाने के लिए अधिकृत नहीं हैं परन्तु केवल इस स्थिति में कि जब स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसा किया हो और यह सिद्ध हो जाए कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्वयं ऐसा परिवर्तन और बदलाव किया है और अब तक ऐसा सिद्ध न हो तो हम क़ुर्आन की तर्सीअ और क्रम को अस्त-व्यस्त नहीं कर सकते और न उसमें अपनी ओर से कुछ वाक्य मिला सकते हैं। यदि ऐसा करें तो ख़ुदा के नज़दीक दोषी और पकड़ने योग्य हैं। अब दर्शकगण स्वयं आदरणीय मौलवी साहिब की पुस्तक को देख लें कि क्या वह ऐसी ही कार्रवाइयों से भरी हुई है या कहीं उन्होंने ऐसा भी किया है कि पवित्र क़ुर्आन की कोई आयत इस प्रकार से प्रस्तुत की है कि अपनी ओर से नहीं बल्कि सिद्ध करके दिखा दिया है कि स्वयं रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस से उस आयत के अर्थ से हज़रत मसीह का जीवित रहना ही सिद्ध होता है और बनावटों एवं अक्षरांतरणों से काम नहीं लिया है। हमें न मौलवी रसूल बाबा साहिब से कुछ हठ और बैर है न किसी अन्य मौलवी साहिब से यदि वे यहुदियों जैसी पद्धति पर न चलें और सही संतुलन से काम लें तो फिर प्रमाणित बात को स्वीकार न करना बेईमानी है। यदि कोई पक्षपातों से पृथक होकर इस बात पर विचार करे कि वास्तविकताएं कैसे सिद्ध होती हैं और उनके सबूत के लिए नियम क्या है तो वह समझ सकता है कि ख़ुदा तआला ने ऐसा नियम केवल एक ही रखा है और वह यह है कि साफ, स्पष्ट और ऐसी स्पष्ट बातों को जिनके लिए प्रमाण की आवश्यकता न हो तो काल्पनिक बातों को सिद्ध करने के लिए बतौर तर्कों के प्रयोग किया जाए। और यदि ऐसी बात को बतौर दलील के प्रस्तुत करें कि वह स्वयं काल्पनिक और संदिग्ध बात है जो बनावटों, तावीलों तथा अक्षरांतरणों से बनाया गया है तो उसे दलील नहीं कहेंगे बल्कि वह एक अलग दावा है जो स्वयं तर्क का मुहताज है। दावे पर दलील मांगी जाए तो एक और दावा प्रस्तुत कर देते हैं और नहीं समझते कि वह दावा स्वयं ऐसा ही सबूत का मुहताज है जैसा कि पहला दावा। हमने अपने विरोधी मत रखने वाले मौलवियों से हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के जीवित रहने एवं मृत्यु के बारे में केवल एक ही प्रश्न किया था। यदि ईमानदारी से उस प्रश्न पर विचार करते तो उनकी हिदायत (मार्ग दर्शन) के लिए एक ही प्रश्न पर्याप्त था। परन्तु किसी को हिदायत पाने की इच्छा होती तो विचार भी करता।

(शेष.....) (पुस्तक: इत्मामुलहुज्जत पृष्ठ 54-57)

☆ ☆ ☆

सम्पादकीय

जलसा सालाना का महत्त्व, उद्देश्य और बरकतें

प्रिय पाठको ! जलसा सालाना क़ादियान को अब केवल दो महीने शेष रह गए हैं। इस जलसे का आरंभ ख़ुदा तआला के इशारों और उसकी खुशखबरियों के अंतर्गत हुआ था। ये जलसा अपने अंदर असंख्य बरकतों तथा लाभों को समेटे हुए है। जलसा सालाना हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक निशान है। यह आपसी प्रेम और भाईचारे को बढ़ावा देने का सबसे अच्छा साधन है। वैश्विक शांति और विभिन्न धर्मों के बीच सहिष्णुता को बढ़ावा देने का गारंटर है। जलसा सालाना जमाअत के सदस्यों की तरबियत और सुधार और ज्ञान, रूहनीयत और ख़ुदा से मोहब्बत में वृद्धि का कारण है। ये जलसा इस लिहाज़ से भी बाबरकत है क्योंकि ये अहमदियत के मर्कज़ क़ादियान दारुल अमान में आयोजित होता है जहां हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का जन्म हुआ और जहां आपका देहांत भी हुआ और यह स्थान अल्लाह तआला की निशानियों से भरा हुआ है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़ुलफ़ा-ए-किराम ने जलसा सालाना के महत्त्व, उद्देश्य और बरकतों के हवाले से अहबाब जमाअत को बार बार तवज्जो दिलाई है। नीचे कुछ इक़तिबासों के माध्यम से जलसा सालाना के उद्देश्य और एहमीयत एवं लाभों को उजागर किया जा रहा है ताकि अहबाब जमाअत इस लिल्लही (ख़ुदा की खातिर आयोजित किए जा रहे) जलसे के लिए अभी से दुआओं के साथ शामिल होने की नीयत कर लें।

जलसा पर आना कोई मामूली बात नहीं

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"इस जलसा को मामूली इन्सानी जलसों की तरह न समझो। यह एक ऐसा मामला है जिसका आधार पूरी तरह से सच्चाई के समर्थन और इस्लाम के नाम की बुलंदी पर रखा गया है। इस सिलसिला की बुनियादी ईंट ख़ुदा तआला ने अपने हाथ से रखी है और इसके लिए क़ौमें तैयार की हैं जो शीघ्र इस में आ मिलेंगी क्योंकि ये उस सर्वशक्तिमान का काम है जिसके आगे कोई बात अनहोनी नहीं।"

(मजमूआ इश्तिहारात जिल्द 1 पृष्ठ 341-342)

जलसा पर आने की तहरीक करें

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह अन्हु फरमाते हैं:

"मैं एक तरफ़ तो जमाअत के लोगों और सिलसिला के अख़बारों को तवज्जा दिलाता हूँ कि वह लोगों को जलसा पर आने की तहरीक करें ताकि ज़्यादा से ज़्यादा लोग आएं और अपने इस काम से ख़ुदा के फ़ज़ल के वारिस बनें। और ताकि ख़ुदा तआला दिखाए कि दुश्मनी और ईर्ष्या-द्वेष रखने वाले लोग जमाअत को नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते। दूसरी बात साथ ही ये कहना चाहता हूँ कि जितने ज़्यादा लोग जलसा पर आएँगे उतना ही खर्च ज़्यादा होगा। इसलिए क़ादियान के लोगों को भी और बाहर के लोगों को भी तवज्जो

दिलाता हूँ कि जो लोग जलसा पर आएं उनके खर्चे का इंतिज़ाम करें। ख़ुदा तआला का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से वादा है कि :

يَأْتِيْكَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ- وَيَأْتُوْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ

कि दूर दूर से तेरे पास उपहार आएँगे और दूर दूर से लोग तेरे पास आएँगे। आने वालों को ख़ुदा तआला ने पीछे रखा है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इसके बारे में फ़रमाते थे कि ये इसलिए रखा है कि मेहमानों के लिए सामान पहले उपलब्ध होना ज़रूरी होता है।" (ख़ुतबात-ए-महमूद जिल्द-11 पृष्ठ- 248)

हक़ाइक़ व मआरिफ़ (अध्यात्म ज्ञान) में तरक़्क़ी

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"इस जलसा में ऐसे हक़ाइक़ और मआरिफ़ (अध्यात्म ज्ञान) एवं उपदेश सुनाने का कार्य होगा जो ईमान और यक़ीन और मारिफ़त को तरक़्क़ी देने के लिए ज़रूरी हैं और साथ ही उन दोस्तों के लिए ख़ास दुआएं और ख़ास तवज्जो होगी और जहां तक सामर्थ्य है सबसे बढ़कर रहम करने वाले ख़ुदा के दरबार में कोशिश की जाएगी कि ख़ुदा तआला उनको अपनी तरफ़ खींचे और अपने लिए क़बूल करे और पाक तबदीली उन में पैदा करे। और एक आरज़ी फ़ायदा इन जलसों में ये भी होगा कि हर नए साल में जितने नए भाई इस जमाअत में दाख़िल होंगे वे निर्धारित तिथि पर हाज़िर होकर अपने पहले भाईयों के मुँह देख लेंगे और एक-दूसरे से जान-पहचान होकर आपस में प्यार-मोहब्बत का रिश्ता बढ़ेगा और जो भाई इस बीच दुनिया से चला जाएगा, इस जलसा में उसके लिए दुआ-ए-मग़्फ़िरत की जाएगी और तमाम भाइयों को रुहानी तौर पर एक करने के लिए उनकी ख़ुश्की और अजनबीयत और दोगलेपन को दरमियान से उठा देने के लिए ख़ुदा तआला के दरबार में कोशिश की जाएगी। इस रूहानी जलसे में और भी कई रूहानी फायदे होंगे जो इंशाअल्लाह समय समय पर ज़ाहिर होते रहेंगे।" (आसमानी फ़ैसला, रुहानी ख़ज़ाइन जिल्द-4 पृष्ठ-376)

जलसा हेतु सफर करने वालों के लिए दुआएं

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"हर एक साहिब जो इस लिल्लही (ख़ुदा की खातिर आयोजित किए जा रहे) जलसा के लिए सफ़र करें, ख़ुदा तआला उनके साथ हो और उनको उत्तम प्रतिफल प्रदान करे और उन पर रहम करे। और उनकी कठिनाइयों और परेशानियों को आसान करे। और वह उनके दुख-दर्दों को दूर करे और उन्हें पीड़ा से मुक्ति प्रदान करे और उनकी मुरादें पूरी करे और उन्हें क़यामत के दिन अपने उन बंदों के साथ उठाए जिन पर उसकी कृपा है, और ताकि मरने के बाद उनका जानशीन हो। हे ख़ुदा, हे परम दयालु! इन सभी दुआओं को क़ुबूल कर और हमें हमारे विरोधियों पर खुला-खुला गलबा (प्रभुत्व) नसीब कर क्योंकि हर शक्ति और ताक़त तेरे ही पास है।" (मजमूआ इश्तिहारात जिल्द-1, पृष्ठ- 342)

सभी अहमदी भाइयों को इस जलसे में सम्मिलित होने के लिए कोशिश करनी चाहिए। अल्लाह तआला हम सबको इसकी तौफीक अता फरमाए।

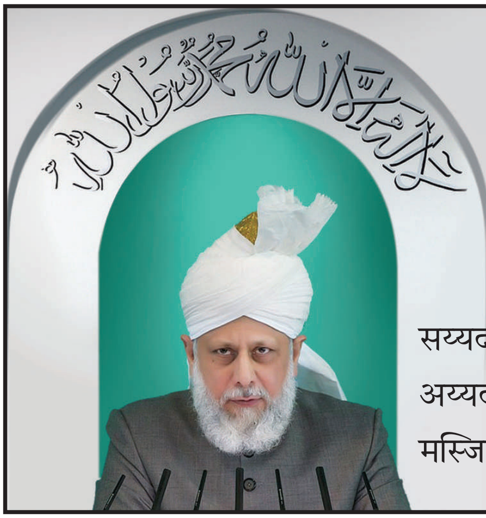

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 27.9.2024 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

ख़न्दक नामक युद्ध के परिपेक्ष में सीरत नबवी सअव **का बयान।**

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूर: फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

जैसा कि मैंने पिछले ख़ुत्ब: में भी वर्णन किया था कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने भी उन परिस्थितियों का वर्णन फ़रमाया है जो अहज़ाब की लड़ाई में घटित हुईं।

आप रज़ी. फ़रमाते हैं कि चूँकि मदीने का काफ़ी भाग खाईयों के कारण सुरक्षित था तथा दूसरी ओर कुछ पहाड़ी टीले तथा कुछ पक्के भवन एवं कुछ बाग़ इत्यादि थे इसलिए सेना यकायक हमला नहीं कर सकती थी। अतएव काफ़िरों ने विचार विमर्श करके सोचा कि किसी तरह मदीने में मौजूद यहूदी क़बीले बनू क़ुरैज़ा को अपने साथ मिला लिया जाए तथा इसके माध्यम से मदीने तक पहुंचने का रास्ता खोला जाए। बनू नज़ीर के सरदार ह्यी बिन अख़तब को नियुक्त किया गया कि बनू क़ुरैज़ा को अपने साथ मिलाने की कोशिश करे। पहले तो बनू क़ुरैज़ा के सरदारों ने इंकार किया परन्तु फिर ह्यी बिन अख़तब के हरे हरे बाग़ दिखाने पर वे समझौता तोड़ने के लिए तय्यार हो गए। बनू क़ुरैज़ा मुसलमानों के दोस्त थे तथा यदि वे युद्ध में शामिल न भी होते, तब भी मुसलमान यह आशा रखते थे कि उनकी ओर से होकर मदीने पर कोई हमला नहीं कर सकेगा। इसी कारण से उनकी ओर का भाग पूर्णत: असुरक्षित छोड़ दिया गया था। ऐसे समय पर बनू क़ुरैज़ा का दुश्मन के साथ मिलने से मदीने पर हमले की आशंका भी अधिक हो गई थी। अतएव इन परिस्थितियों में मुसलमानों की आशंका स्वभाविक थी तथा इसके रोक थाम की भी आवश्यकता थी। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीने की रक्षा के लिए पाँच सौ लोगों को नियुक्त करने का निश्चय किया। बनू क़ुरैज़ा के समझौता तोड़ने की ख़बर मुसलमानों तक पहुंच गई तो उनका भय और अधिक हो गया तथा महिलाओं एवं उन बच्चों की चिंता होने लगी। जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह सूचना

मिली तो आप स. ने हज़रत सलमा बिन असलम रज़ी. को दो सौ लोग तथा हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ी. को तीन सौ लोगों के साथ मदीने की सुरक्षा के लिए भेजा और फ़रमाया कि रात के समय वे विभिन्न स्थानों पर पहरा दें तथा समय समय पर तकबीर अर्थात अल्लाहु अकबर के नारे लगाते रहें।

हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ी. ने इसको इस प्रकार बयान फ़रमाया है कि इस स्थिति ने जिसकी वास्तविकता किसी बुद्धिमान व्यक्ति से छिपी नहीं रह सकती, दुर्बल मुसलमानों में बड़ी व्याकुलता एवं आशंका पैदा कर दी। कुछ मुनाफ़िक़ों ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित होकर यह कहना शुरु कर दिया कि या रसूलुल्लाह स.! नगर में हमारे मकान पूर्णत: असुरक्षित हैं, आप स. आज्ञा दें तो हम अपने घरों में ठहर कर उनकी रक्षा करें। जिसके उत्तर में वह्यी अवतरित हुई-

وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۚ إِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا فِرَارًا

अर्थात- यह ग़लत है कि इन लोगों को अपने घरों के असुरक्षित होने की आशंका है बल्कि बात यह है कि युद्ध स्थल से भागने का बहाना ढूंड रहे हैं। अत: ऐसे भयावह समय पर मुसलमानों की छोटी सी जमाअत, जिनमें कुछ कमज़ोर स्वभाव के लोग तथा कुछ मुनाफ़िक़ भी शामिल थे, क्या मुक़ाबला कर सकती थी? कई बार परिस्थितियाँ अति आशंका जनक अवस्था धारण कर लेतीं तथा लगता कि किसी कमज़ोर अवसर से लाभ उठा कर काफ़िरों की सेना नगर की सीमा में दाखिल हो जाए। इन हमलों का मुक़ाबला मुसलमानों की ओर से साधारणत: तीर के द्वारा किया जाता था।

ये दिन मुसलमानों के लिए अत्यंत कठिनाई एवं दुविधा एवं आशंका जनक थे। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन परिस्थितियों में सअद बिन मुआज़ रज़ी. तथा सअद बिन अबादा रज़ी. से फ़रमाया कि यदि तुम लोग चाहो तो ग़तफ़ान नामक क़बीले को कुछ भाग वसूली में से देकर इस युद्ध को टाल दिया जाए। इस पर दोनों ने एक साथ कहा कि या रसूलुल्लाह सअव! जब हमने शिर्क की हालत में भी कभी किसी दुश्मन को कुछ नहीं दिया तो अब मुसलमान होकर क्यूँ दें। वल्लाह! हम इन्हें तलवार की धार के अतिरिक्त कुछ नहीं देंगे। चूँकि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अन्सार ही के कारण अधिक चिंता थी जो मदीने के मूल निवासी थे तथा सम्भवत: इस विचार विमर्श में आप स. का उद्देश्य भी केवल यही था कि अन्सार की मानसिक स्थिति का पता लगाएँ कि क्या वे इन कठिनाईयों से परेशान तो नहीं हैं और यदि वे परेशान हों तो उनको संतुष्टि दें। आप स. ने पूरी ख़ुशी से उनका सुझाव स्वीकार किया तथा युद्ध जारी रहा।

इस दुविधापूर्ण स्थिति में विभिन्न स्थानों पर पहरे में स्वयं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी मौजूद होते। मदीने की ये रातें कठोर शीत ऋतु की रातें थीं तथा भूख की कठिनाईयाँ इनके अतिरिक्त थीं। हज़रत आयशा रज़ी बयान करती हैं कि एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इतने थके हुए थे कि फ़रमाया- काश, कोई नेक आदमी होता तो पहरा देता। सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ी. ने कहा या रसूलुल्लाह स., मैं आप स. की सुरक्षा के लिए पहरा देता हूँ। आप स. ने फ़रमाया- अमुक स्थान पर जाओ, वहाँ खाई का एक भाग कमज़ोर है, वहाँ पहरा दो। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बलिदानी

सहाबियों का भी आप स. से वफ़ा का अद्‌भुत रंग था। इस तरह वे अपने आपको पेश कर रहे हैं तथा दूसरी ओर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी ज़ात पर इन सबको प्राथ्मिकता दे रहे थे। ऐसे दलेर को अपने प्राण की कोई चिंता नहीं, मदीने वालों की चिंता है तथा इसके लिए स्वयं जगह जगह मौजूद होते हैं तथा कभी प्रत्यक्षत: विश्राम करने के लिए तम्बू में तशरीफ़ लाते भी हैं तो उस समय का अधिकांश भाग ख़ुदा के समक्ष सिर को सजदे में रख कर दुआएँ करते हुए नज़र आते हैं। इस युद्ध के समय हज़रत सफ़िया रज़ी. के शौर्य की एक घटना भी मिलती है। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ी. लिखते हैं कि महिलाओं तथा बच्चों को नगर के एक विशेष भाग, जो एक प्रकार के क़िले जैसा था, में रखा जाता था तथा उनकी रक्षा के लिए केवल ऐसे पुरुष रह जाते थे जो किसी कारणवश युद्ध के मैदान में जाने के योग्य न हों। यहूदियों ने एक अवसर पर जासूसी के उद्‌देश्य से अपना एक आदमी उस मुहल्ले में भेजा। उस समय संयोगवश महिलाओं के पास केवल एक सहाबी हस्सान बिन साबित रज़ी. मौजूद थे। महिलाओं ने जब उस दुशमन यहूदी को ऐसी संदिग्ध स्थिति में अपने निवास स्थान के निकट चक्कर लगाते देखा तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बुआ सफ़िया बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ी. ने हस्सान रज़ी. से कहा कि इसकी हत्या कर दो। परन्तु हस्सान रज़ी. को इसका साहस न हुआ जिस पर हज़रत सफ़िया रज़ी. ने स्वयं आगे निकल कर उस यहूदी का मुक़ाबला किया, उसे मार कर गिरा दिया और उसका सिर काट कर यहूदियों की सीमा में गिरा दिया ताकि यहूदियों को मुसलमान महिलाओं पर हमला करने का दुस्साहस न हो तथा वे यह समझें कि उनकी सुरक्षा के लिए इस जगह काफ़ी पुरुष मौजूद हैं। अतएव यह युक्ति काम कर गई तथा यहूदी लोग निराश होकर वापस चले गए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने भी इस घटना को बयान करते हुए फ़रमाया कि अनुसंधान से पता चलता है कि वह यहूदी था तथा बनू क़ुरैज़ा का जासूस था तो मुसलमान और अधिक घबरा गए तथा समझे कि मदीने की यह दिशा भी सुरक्षित नहीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने महिलाओं की सुरक्षा को प्रमुख समझा तथा बारह सौ में से पाँच सौ सैनिकों को महिलाओं की सुरक्षा हेतु नगर में नियुक्त कर दिया तथा ख़न्दक़ की रक्षा एवं अठारह बीस हज़ार की सेना के मुक़ाबले के लिए केवल सात सौ सैनिक रह गए।

हज़रत अली रज़ी. का उमरू बिन अब्दु वद्‌द की हत्या करने की घटना भी मिलती है। उमरू बिन अब्दु वद्‌द ऐसा बहादुर था कि अरब में एक हज़ार पुरुषों के समान समझा जाता था। यह अपने दोस्तों के साथ खाई को पार करके आया तथा अति अहंकार से आवाज़ लगाई कि ऐ जन्नत की अभिलाषा करने वालो, आओ मैं तुम्हें जन्नत में पहुंचा दूँ अथवा तुम मुझे नर्क में भेज दो। जब उसने दूसरी या तीसरी बार आवाज़ दी तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वयं अपनी पगड़ी हज़रत अली रज़ी. के सिर पर बांधी तथा तलवार प्रदान की तथा दुआ देते हुए मुक़ाबले पर भेज दिया। उस व्यक्ति ने मुक़ाबला किया तथा हज़रत अली रज़ी. ने उसका वध कर दिया। उसकी हत्या के बाद उसके साथी भाग गए। एक कथन के अनुसार ज़िरार बिन ख़त्ताब जो कि हज़रत उमर रज़ी. का भाई था, यह जब भागा तो हज़रत उमर रज़ी. ने उसका पीछा किया। सहसा ज़िरार रुका और हज़रत उमर रज़ी. पर भाले से हमला करने को था कि रुक

गया एवं हमला नहीं किया। फिर हज़रत उमर रज़ी. को सम्बोधित करते हुए यह कहा कि ऐ उमर, मेरा यह उपकार याद रखना कि मैंने तुम पर हमला नहीं किया। ज़िरार का क्या उपकार होना था, हाँ अल्लाह तआला का यह उपकार उस पर हुआ कि मक्का की विजय के अवसर पर यही ज़िरार इस्लाम ले आए, इस्लाम के युद्धों में भरसक सहयोग किया, ख़ूब बहादुरी के जौहर दिखाए तथा यमामा के युद्ध में शहादत पाई। कुछ लोग कहते हैं कि शहादत नहीं पाई बल्कि देर तक जीवित रहे तथा इस्लाम पर निधन हुआ।

कुछ रिवायतों के अनुसार उमरू बिन अब्दु वद्द के बजाए नौफ़िल बिन अब्दुल्लाह एक अवसर पर मारा गया था तथा उसके शव के लिए काफ़िरों ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सन्देश भेजा था कि यदि आप स. उसका शव वापस कर दें तो वे दस हज़ार दर्हम आप स. को देने के लिए तय्यार हैं। उन लोगों का तो यह विचार था कि सम्भवत: जिस तरह हमने मुख्याओं बल्कि स्वयं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा की नाक और कान ओहद की लड़ाई में काट दिए थे, इसी तरह सम्भवत: आज मुसलमान हमारे इस मुख्या की नाक कान काट कर हमारी क़ौम का अपमान करेंगे। किन्तु इस्लाम के आदेश तो पूर्णत: भिन्न हैं। इस्लाम शवों का अपमान करने की अनुमति नहीं देता। अतएव काफ़िरों का यह सन्देश रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास पहुंचा तो आप स. ने फ़रमाया- इस शव को हमने क्या करना है? यह शव हमारे किस काम का है कि इसके बदले हम तुमसे कोई मूल्य वसूल करें। अपना शव बड़े चाव के साथ उठा कर ले जाओ, हमें इससे कोई लेना देना नहीं।

हुज़ूरे अनवर ने अन्त में ज़ैली तंज़ीमों के इज्तिमा का वर्णन करते हुए उपदेश दिया कि इन दिनों में विशेष रूप से दुआओं में बहुत समय व्यतीत करें, दरूद पढ़ने की ओर ध्यान रखें। अल्लाह तआला आप सबको इसकी तौफ़ीक़ दे और इज्तिमा के उद्देश्य को पूरा करने की कोशिश करें, न यह कि केवल मनोरंजन के प्रोग्रामों अथवा बातों में समय व्यतीत करें। अल्लाह तआला हरएक दृष्टि से यह बरकत पूर्ण फ़रमाए।

☆ ☆ ☆

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457
FENLEYROSH
Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790
www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

अहमदिया मुस्लिम जमात के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब के एक कट्टर विरोधी की आप से मुलाक़ात के बाद आप के बारे में राय

अनुवादक : फरहत अहमद आचार्य

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

जल्सा सालाना क़ादियान, ज़िला गुरदासपुर दिनांक 27 दिसम्बर 1892 ई. का विवरण जो समय के मुजद्दिद, युग के मसीह जनाब मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब (अल्लाह तआला की सलामती हो आप पर) के निवास स्थान पर हुआ और उस पर ख़ाकसार की राय जो आदरणीय मिर्ज़ा साहिब से मुलाक़ात (भेंट) और जल्सा एवं उसमें सम्मिलित होने वाले लोगों को देखने के बाद बनी

मिर्ज़ा साहिब ने मुझे भी इसके बावजूद कि उन्हें भली भांति ज्ञात था कि मैं उनका विरोधी हूं न केवल विरोधी बल्कि बुरा कहने वाला भी और यह मुझे से दो-तीन बार घटित हो चुका है। जल्से पर बुलाया और कुछ पत्र जिनमें एक रजिस्टर्ड पत्र भी था भेजे। यद्यपि इस से पूर्व अनभिज्ञता और विरोध के कारण मेरा जाने का इरादा न था, परन्तु मिर्ज़ा साहिब के बारम्बार लिखने से मेरे दिल में एक प्रेरणा ने जन्म लिया। यदि मिर्ज़ा साहिब इतनी आत्मीयता से न लिखते तो मैं हरगिज़ न जाता और वंचित रहता किन्तु यह उन्हीं का हौंसला था। आजकल के मौलवी तो अपने सगे बाप से भी इस आत्मीयता और सम्मानपूर्वक व्यवहार नहीं करते। मैं 27 तारीख को दोपहर से पहले क़ादियान में पहुंचा। उस समय मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब मिर्ज़ा साहिब के समर्थन में वर्णन कर रहे थे और वर्णन समाप्त होने के निकट था। अफ़सोस कि मैंने पूरा नहीं सुना। लोगों से सुना कि बहुत उत्तम वर्णन था। फिर हामिद शाह साहिब ने मिर्ज़ा साहिब की सच्चाई और प्रशंसा में अपने अश्आर पढ़े। परन्तु चूंकि मुझे अभी तक दिलचस्पी नहीं थी और मेरा दिल मैला था। कुछ शौक़ और प्रेम से नहीं सुना, परन्तु अश्आर उत्तम थे। अल्लाह तआला लेखक को अच्छा प्रतिफल दे।

जब मैं मिर्ज़ा सिहब से मिला और उन्होंने शिष्टाचार पूर्वक व्यवहार किया तो मेरा दिल नर्म हो गया मानो मिर्ज़ा साहिब की नज़र सुरमे की सलाई थी जिस से मेरे दिल की आंखों से कड़वाहट की धूल छट गई और क्रोध का पानी सूखने लगा और कुछ कुछ धुंधली सी सच्चाई दिखाई देनी शुरू हुई। और धीरे-धीरे अंदरूनी नज़र ठीक हो गई। मिर्ज़ा साहिब के अतिरिक्त इस जल्से में कई भाई ऐसे थे जिन्हें मैं तिरस्कार और शत्रुतापूर्वक देखता था अब उनको प्रेम और मुहब्बत से देखने लगा और यह हाल हुआ कि जल्से में शामिल समस्त लोगों में से जो मिर्ज़ा साहिब के अधिक प्रेमी थे वे मुझे भी अधिक प्रिय मालूम होने लगे। अस्र के बाद मिर्ज़ा साहिब ने कुछ बयान किया, जिसके सुनने से मेरे समस्त सन्देह दूर हो गए और आंखें खुल गईं। दूसरे दिन प्रातः काल एक अमृतसरी वकील साहिब

ने अपना विचित्र किस्सा सुनाया जिस से मिर्ज़ा साहिब की उच्च श्रेणी की करामत सिद्ध हुई। जिस का ख़ुलासा यह है कि वकील साहिब पहले सुन्नत जमात मुसलमान थे। जब जवान हुए, प्रचलित विद्या का अध्ययन किया तो दिल में धार्मिक ज्ञान से अनभिज्ञता के कारण और समय के उलेमा तथा युग के पीरों के इस्लामी आदेशों का पालन न करने से सन्देह पैदा हुए और कहीं से सन्तोषजनक उत्तर न मिलने के कारण कई बार धर्म पर परिवर्तन किया। सुन्नी से शिया बने। वहां तबर्राबाज़ी और ताज़िया साज़ी (ताज़ियों का निर्माण) के अतिरिक्त कुछ दिखाई न दिया। आर्य हुए। कुछ दिन वहां का आनन्द लिया परन्तु अच्छा न लगा। ब्रहमो समाज में सम्मिलित हुए। उनका ढंग अपनाया परन्तु वहां भी मज़ा न पाया। नेचरी बने परन्तु आन्तरिक शुद्धता या ख़ुदा का प्रेम कुछ नूरानियत (प्रकाश) कहीं भी दिखाई नहीं दी। अन्ततः मिर्ज़ा साहिब से मिले और बहुत बेबकाना पेश आए। परन्तु मिर्ज़ा साहिब ने दया एवं हमदर्दी से बात की और ऐसा अच्छा नमूना दिखाया कि अन्ततः इस्लाम पर पूरे-पूरे जम गए और नमाज़ी भी हो गए। अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आज्ञाकारी बन गए। अब मिर्ज़ा साहिब के बड़े श्रद्धालु हैं।

रात को मिर्ज़ा साहिब ने नवाब साहिब[1]☆ के निवास स्थान पर बहुत उत्तम भाषण दिया और अपने कुछ स्वप्न और इल्हाम वर्णन किए। कुछ लोगों ने इल्हाम की सच्चाई की गवाहियां दीं जिन के सामने वे इल्हाम पूरे हुए। एक साहिब ने प्रातः काल, नमाज़ फ़ज्र के बाद अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी रह. का एक स्वप्न सुनाया जबकि अब्दुल्लाह साहिब ख़ैर दी गांव में विराजमान थे। अब्दुल्लाह साहिब ने फ़रमाया हमने मुहम्मद हुसैन बटालवी को एक लम्बा कुर्ता पहने देखा और वह कुर्ता टुकड़े-टुकड़े हो गया। यह भी अब्दुल्लाह साहिब ने फ़रमाया था कि कुर्ते से अभिप्राय ज्ञान है, आगे पारा-पारा होने से बुद्धिमान स्वयं समझ सकता है कि जैसे ज्ञान का पोल खुल गया। जो आजकल हो रहा और मालूम नहीं कहां तक होगा। जो अल्लाह के वली को दुःख देता है तो मानो अल्लाह तआला से लड़ता है अन्ततः हारेगा। अब मुझ पर भली भांति सिद्ध हुआ कि लोग बड़े अन्याय करने वाले हैं जो बिना मुलाक़ात और वार्तालप के मिर्ज़ा साहिब को दूर बैठे दज्जाल, कज़्ज़ाब बना रहे हैं और उनके कलाम के ग़लत मायने गढ़ रहे हैं या किसी दूसरे की शिक्षा को बिना पूछ-ताछ किए मान लेते हैं, मिर्ज़ा साहिब से उसके संबंध में जांज-पड़ताल नहीं करते। मिर्ज़ा साहिब जो आकाशीय शहद उगल रहे हैं उसे वे शैतानी ज़हर बताते हैं और कठोर हृदय तथा शत्रुता के पर्दे के कारण दूर से ही ग़ुलाब को पेशाब कहते हैं और जन सामान्य अपने विशेष लोगों के अधीन होकर उसके खाने-पीने से रुकते हैं और अपनी सर्वथा हानि करते हैं। सब से अधिक इस ख़ाकसार के पुराने मित्र या पुराने अनुकर्णीय मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी लोगों को मिर्ज़ा साहिब से हटाने और नफ़रत दिलाने में व्यस्त हैं जिनको सर्वप्रथम मिर्ज़ा साहिब से ख़ाकसार ने बदगुमान किया था, जिसके बदले में इस बार उन्होंने मुझे बहकाया और सीधे मार्ग से

☆ नवाब साहिब मालेर कोटला जो उस समय अपने कुछ लोगों के साथ जल्से में सम्मिलित थे।

अलग कर दिया। चलो बराबर हो गए। परन्तु मौलवी साहिब अभी तक उसी बात पर अड़े हैं। अब जो जल्से पर मिर्ज़ा साहिब ने मुझे बुलाया तो मौलवी साहिब को भी एक ख़बरी ने सूचना दी। उन्होंने अपने वकील के द्वारा मुझे पत्र लिखा जिसमें हमदर्द नसीहत करने वाले ने मिर्ज़ा को इतना अधिक बुरा भला लिखा और ऐसे अशिष्ट शब्द कलम से निकाले कि जिन को दोहराते हुए शर्म आती है। मौलवी साहिब ने यह भी ध्यान न रखा कि बुज़ुर्ग होने के अतिरिक्त मिर्ज़ा साहिब कितने क़रीब रिश्तेदार हैं फिर मुहब्बत का दावा है। अफ़सोस!

इस जल्से पर तीन सौ अधिक समय और नेक लोग एकत्र थे जिनके चेहरों से मुसलमानी नूर टपक रहा था। अमीर, ग़रीब, नवाब, इंजीनियर, थानेदार, तहसीलदार, ज़मींदार, सौदाग़र, हकीम हर प्रकार के लोग थे। हां कुछ मौलवी भी थे परन्तु विनम्र मौलवी। मौलवी के साथ मिस्कीन और मुन्कसर शब्द यह मिर्ज़ा साहिब की करामत है कि मिर्ज़ा साहिब से मिलकर मौलवी भी मिस्कीन (विनम्र) बन जाते हैं अन्यथा आजकल मिस्कीन मौलवी तथा बिदअतों से बचने वाला सूफ़ी दुर्लभ समान हैं। मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब अपने दिल में विचार करके देखें कि वह मिस्कीनी (विनम्रता) से कहां तक संबंध रखते हैं? बिल्कुल भी नहीं। उनमें यदि विनम्रता होती तो इतना उपद्रव ही क्यों होता, यह नौबत ही क्यों आती। उनके अनुयायियों को उन से इतना बैर और नफ़रत क्यों होती अधिकतर अहले हदीस उनसे विमुख क्यों हो जाते? यदि मौलवी साहिब मेरे इस बयान को ग़लत समझें तो मैं उन्हीं के सुपुर्द करता हूं इन्साफ़ और ईमान से अपने दोस्तों की एक लिस्ट तो लिख कर छपवा दें कि जो उन से ऐसा प्रेम रखते हैं जैसा कि मिर्ज़ा साहिब के मुरीद मिर्ज़ा साहिब से प्रेम रखते हैं। मुझे क़ियाफ़ा (मुखाकृति विज्ञान) से मालूम होता है वह समय निकट है कि जनाब मिर्ज़ा साहिब के चरणों की धूल को प्रतिभाशाली लोग आखों में जगह दें और इकसीर (कीमिया) से उत्तम और तबर्रुक (प्रसाद) समझें। मिर्ज़ा साहिब के सैकड़ों ऐसे मित्र हैं जो मिर्ज़ा साहिब पर दिल-व-जान से क़ुर्बान हैं। मतभेद तो दूर, सामने उफ़ तक नहीं करते। सरे तस्लीम ख़म है जो मिज़ाजे यार में आए। मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब अधिक नहीं अपने चार-पांच लोग तो ऐसे मित्र बता दें जो पूर्णत: (ख़ुदा के लिए) मौलवी साहिब से प्रेम रखते हों और दिल और जान से फ़िदा हों और अपने माल को मौलवी साहिब पर क़ुर्बान कर दें और अपने सम्मान को मौलवी साहिब के सम्मान पर न्योछावर करने के लिए तैयार हों। यदि मौलवी साहिब यह कह दें कि सच्चों और नेकों से लोगों को प्रेम नहीं होता बल्कि झूठे और मक्कारों से लोगों को प्रेम होता है तो मैं पूछता हूं कि सहाबा और अहले बैअत को जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रेम था या नहीं? वे हज़रत के पूर्ण रूप से आज्ञाकारी थे या उनको मतभेद था? बहुत क़रीब की एक बात स्मरण कराता हूं कि मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी जो मेरे और मुहम्मद हुसैन साहिब के पीर-व-मुर्शिद थे उनके मुरीद उन से कितना प्रेम करते थे और कितना उनके आदेशों का पालन करने वाले थे? सुना है कि एक बार उन्होंने अपने एक विशेष मुरीद को कहा कि तुम 'नजद' जो अरब देश में है जाकर मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब के लिखे हुए 'रसाइल-ए-तौहीद' नक़ल कर

लाओ। वह मुरीद तुरन्त रवाना हुआ एक पल की भी देर न की। हालांकि रास्ते का ख़र्च और सवारी भी उसके पास न थी। मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब अपने किसी मित्र को बाज़ार से पैसा देकर दही लाने को भी कह दें तो शायद न जाए और यदि जाए तो नाराज़ होकर। और शायद अकेले में लोगों से शिकायत भी करे। बबीं तफ़ावुते राह अज़ कुज़ा अस्त ता बकुजा (अर्थात कहां से कहां तक का अंतर देखिए)। यह नमूने के तौर पर वर्णन किया गया है। हर सदी में हज़ारों औलिया (जिन पर उनके युग में कुफ़्र के फ़त्वे भी लगते रहे हैं) गुज़रे हैं और कमोबेश उन के मुरीद उनके आज्ञाकारी और जान क़ुर्बान करने वाले भी हुए हैं। यह परिणाम है नेकों का ख़ुदा के साथ हार्दिक प्रेम का। मिर्ज़ा साहिब को चूंकि अपने मौला से सच्चा प्रेम है इसलिए आकाश से कुबूलियत उतरी है और धीरे-धीरे बावजूद मौलवियों के कट्टर विरोध के सौभाग्यशाली लोगों के दिलों में मिर्ज़ा साहिब का प्रेम उन्नति करता जा रहा है (चाहे अबू सईद साहिब नाराज़ ही क्यों न हों) इसके मुकाबले में मौलवी साहिब जो आज माशाअल्लाह पँजाब का सूर्य बने हुए हैं अपने हाल पर विचार करें कि उनके कितने सच्चे प्रेमी हैं और उनके सच्चे दोस्तों का आन्तरिक हाल क्या है। शुरू-शुरू में कहते हैं मौलवी साहिब कभी अच्छे आदमी थे परन्तु अब तो उन्हें दौलत के प्रेम और ज्ञान के गर्व ने सम्मान के आकाश से अपमान की धूल पर गिरा दिया। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजिऊन।

अब मौलवी साहिब विचार करें कि ये क्या पत्थर पड़ गए कि मौलवी और विशेष रूप से मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब से, (जो अपनी समझ में) पंजाब के उलेमा के सरदार हैं, लोगों को इतनी घृणा कि जिसके कारण मौलवी साहिब को लाहौर छोड़ना पड़ा। यदि संयोग से ख़ुदा को एक मानने वालों की जामिअ मस्जिद में लाहौर में चले जाएं तो रंजिश और शर्म के मारे प्रवेश नहीं कर सकते। और मिर्ज़ा साहिब के पास (जो मौलवी साहिब के विचार में काफ़िर बल्कि सबसे बड़ा काफ़िर और दज्जाल हैं) घर बैठे लाहौर, अमृतसर, पेशावर, कश्मीर, जम्मू, सियालकोट, कपूरथला, लुधियाना, बम्बई, उत्तरी एवं पश्चिमी देश, अवध, मक्का इत्यादि देशों से लोग बोरिया बिस्तर बांधे चले आते हैं। फिर आने वाले बिदअती नहीं, मुश्रिक नहीं, मूर्ख नहीं, कंगाल नहीं, बल्कि एक ख़ुदा को मानने वाले, अहले हदीस, मौलवी मुफ़्ती, पीरज़ादे, शरीफ़ अमीर, नवाब, वकील, अब थोड़ा विचार करने का स्थान है कि मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब के गिराने और अधिकांश मौलवियों से कुफ़्र के फ़त्वे पर मुहरें लगवाने के बावजूद अल्लाह तआला ने मिर्ज़ा साहिब को कितना चढ़ाया और ख़ुदा की कितनी जनता को ध्यान दिला दिया कि अपना आराम छोड़ कर देश से अलग होकर, रुपया ख़र्च करके क़ादियान में आकर धरती पर सोते बल्कि रेल में एक-दो रात अवश्य जागे भी होंगे। और कई पैदल चल कर भी उपस्थित हुए। मैंने एक आदमी के मुंह से भी किसी प्रकार की शिकायत नहीं सुनी। मिर्ज़ा साहिब के चारों ओर ऐसे इकट्ठे हो जाते थे जैसे शमा के चारों ओर परवाने। जब मिर्ज़ा साहिब कुछ फ़रमाते थे तो पूरे ध्यान से सुनते थे लगभग चालीस-पचास लोग इस जल्से पर मुरीद हुए। मिर्ज़ा अहमद बेग की मृत्यु की भविष्यवाणी के पूरे होने की बात भी मिर्ज़ा साहिब ने सब लोगों के सामने सुनाई जिसके

बारे में 'नूरअफ़्शां' ने मिर्ज़ा साहिब को बहुत कुछ बुरा भला कहा था। अब 'नूरअफ़्शां' विचार करे कि भविष्यवाणियां इस प्रकार पूरी होती हैं। यह बात मुसलमानों के अतिरिक्त आजकल किसी अन्य धर्मावलम्बी को प्राप्त नहीं। और मुसलमान विशेष तौर पर विरोधीजन विचार करें कि यह क्या अजीब बात है कि काफ़िर, बल्कि सबसे बड़ा काफ़िर, दज्जाल, मक्कार की भविष्यवाणियां, बावजूद इसके कि अल्लाह तआला पर झूठ का पहाड़ बांध रहा है, अल्लाह तआला पूरी कर दे और (जो अपनी समझ में) रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नायब हैं, उनकी बातों में कुछ भी असर न दे तथा उन को ऐसा अपमानित करे कि लाहौर छोड़ कर बटाला में आना पड़े। अफ़सोस, सौ अफ़सोस आजकल के मौलवियों के अंधेपन पर जिनकी आंखों पर ज्ञान के अहंकार के पर्दे पड़े हैं और इसी कारण एक ऐसे ख़ुदा के चुने हुए बन्दे का नाम दज्जाल और काफ़िर रखते हैं जिसे से अल्लाह तआला को ऐसा प्रेम है कि धर्म की सेवा पर नियुक्त कर रखा है और ख़ुदा का वह बन्दा आर्यों, ब्रहम समाज वालों तथा ईसाइयों और नेचरियों से लड़ रहा है। कोई काफ़िर मुकाबले की शक्ति नहीं ला सकता न कोई मौलवी उन्हें काफ़िर, लानती, और दज्जाल बनाने के बावजूद लोगों के दिलों को उनकी ओर से हटा सकता है। ख़ुदा की पनाह, मूसा के असा, और चमकते हुए हाथ को मौलवी लोग अपने विचार में पराजित एवं बदनाम कर रहे हैं। रसूल मक़्बूल के नायबों में कोई बरकत, कुछ नूरानियत नहीं रही। इतना भी ढंग नहीं कि अपने कुछ शिष्यों को भी काबू (नियंत्रण) में रख सकें और मुहम्मदी सदाचार का नमूना दिखा कर अपना आशिक़ (आसक्त) बना लें। किसी देश में हिदायत का प्रसार करना और इस्लाम के विरोधियों को पराजित करना तो दूर की बात एक शहर बल्कि एक मुहल्ले को भी ठीक नहीं कर सकते। इसके विपरीत मिर्ज़ा साहिब ने पूरब-पश्चिम इस्लाम के विरोधियों को इस्लाम की दावत दी और ऐसा नीचा कर दिखाया कि कोई मुकाबले पर आने योग्य नहीं रहा। अधिकतर नेचरियों को जो मौलवियों से हरगिज़ सुधार पर नहीं आ सके, तौबा कराई और पंजाब से नेचरियत का प्रभाव बहुत कम कर दिया। अब वही नेचरी हैं जो मुसलमानों जैसी सूरत के भी नहीं थे मिर्ज़ा साहिब से मिलने के बाद मोमिन सीरत (आचरण) हो गए। अधिकारियों, थानेदारों ने रिश्वतें लेना छोड़ दीं, नशेबाज़ों ने नशे त्याग दिए, कई लोगों ने हुक़्क़ा पीना छोड़ दिया। मिर्ज़ा साहिब के शिया☆ मुरीदों ने तबर्रा[2]✼ त्याग दिया। सहाबा से प्रेम करने लगे, ताज़िएदारी, मर्सियः पढ़ना छोड़ दिया। कुछ पीरज़ादे जो मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी बल्कि मुहम्मद इस्माईल शहीद को अपना पेशवा और बुज़ुर्ग समझने लगे। यदि ये तासीरें (प्रभाव) दज्जालों, कज़्ज़ाबों में होती हैं और रसूल मकबूल के नायब नेक तासीरों से वंचित हैं तो हमें सौ खुशियों के साथ दज्जाली होना स्वीकार है। वृक्ष फलों से ही तो पहचाना जाता है। अल्लाह तआला को भी लोगों ने विशेषताओं से पहचाना, अन्यथा उसका अस्तित्व किसी को दिखाई नहीं देता। किसी स्वस्थ हट्टे-कट्टे का नाम यदि बीमार रख दें तो वास्तव में वह बीमार नहीं हो सकता। इसी

☆ अर्थात कुछ मुरीद मिर्ज़ा साहिब के ऐसे भी हैं जो शिया फ़िरके को मानते हैं।

✼ **तबर्रा -** नफरत. विमुखता. तीन ख़लीफ़ों से नफ़रत। (अनुवादक)

प्रकार जो अल्लाह तआला के नज़दीक पवित्र मोमिन है और जिस के दिल में अल्लाह और रसूल का प्रेम है उसे कोई मुनाफ़िक, काफ़िर, दज्जाल इत्यादि नाम दे तो क्या हानि है। सफेद किसी के काला कहने से काला नहीं हो सकता और चमगादड़ की दुश्मनी से सूर्य निन्दा योग्य नहीं। यज़ीद के शासन से हुसैनी गिरोह यद्यपि कष्ट तो पा सकता है परन्तु मिट नहीं सकता। धीरे-धीरे कष्ट सहन करके उन्नति करेगा और करता जाता है। अर्थात् मौलवियों के मार्ग की रोक बनने से मिर्ज़ा साहिब का गिरोह मिट नहीं सकता। बल्कि ऐसा हाल है जैसा दरिया में बांध बांधने से दरिया रुक नहीं सकता। परन्तु कुछ दिन रुका हुआ मालूम होता है। अन्ततः बांध टूटेगा और दरिया अत्यन्त ज़ोर से बहने लगेगा और आस-पास की बस्तियों के विरोधियों को बहा ले जाएगा। आंधी और बादल सूर्य को छुपा नहीं सकते, स्वयं ही कुछ दिनों में यह शोर दूर हो जाएगा और मिर्ज़ा साहिब की सच्चाई का सूर्य चमकता हुआ निकल आएगा। फिर सौभाग्यशाली लोग तो अफसोस करके मिर्ज़ा साहिब से सहमत हो जाएंगे और पहली ग़लती पर पछताएंगे। और मिर्ज़ा साहिब की किश्ती में जो नूह[अ.] की किश्ती के समान है सवार हो जाएंगे परन्तु अभागा अपने मौलवियों के धोखे और झूठ बोलने के पर्वतों पर चढ़ कर प्राण बचाना चाहेंगे परन्तु गुमराही के समुद्र की एक ही लहर में डूब कर समाप्त हो जाएंगे। हे मेरे ख़ुदा! हमें अपनी शरण (पनाह) में रख और पूर्ण समझ प्रदान कर। उम्मत-ए-मुहम्मदी का तू ही निगरान है। पर्दों को उठा दे, सच्चाई को प्रकट कर दे, मुसलमानों को मतभेद से सद्मार्ग पर लगा दे। आमीन। हे समस्त लोकों के रब्ब! दुआ स्वीकार कर।

العلم حجاب الاکبر

(अर्थात् ज्ञान जो आँखों का पर्दा बन जाए) जो प्रसिद्ध कहावत है उसकी सच्चाई आजकल भली भांति प्रकट हो रही है। पहले इस कहावत से मैं सहमत नहीं था, परन्तु अब इस पर पूर्ण विश्वास हो गया। मिर्ज़ा साहिब के जितने विरोधी मौलवी हैं उतना और कोई नहीं बल्कि दूसरों को तो उलेमा ने ही बहकाया है अन्यथा आज तक हज़ारों लोग बैअत कर लेते। और एक बड़ी भारी भीड़ मिर्ज़ा साहिब के साथ हो जाती, किन्तु विरोध का होना कुछ आश्चर्य की बात नहीं। क्योंकि यदि ऐसा समय जिसमें इस प्रकार के उपद्रव हैं जिसका उदाहरण पहली सदियों में ज्ञात नहीं है न आता तो ऐसा सुधारक भी क्यों पैदा होता। दज्जाल ही के क़त्ल को ईसा का आगमन हुआ है। यदि दज्जाल न होता तो ईसा का आगमन असंभव था और संसार गुमराह न हो जाता तो महदी की क्या आवश्यकता थी। अल्लाह तआला प्रत्येक कार्य को उसके समय पर करता है। हे अल्लाह! तू हमें अपने रसूल की अपने वलियों का प्रेम प्रदान कर तथा अविश्वास और दुविधाओं से सुरक्षित रख। सच्चों के साथ हमें प्रेम दे झूठों से सुरक्षा में रख। हमारे अहं को दूर कर दे और लोभ-लालच से मुक्ति दे। आमीन या रब्बुल आलमीन।

लेखक - नासिर नवाब, दिनांक 2 जनवरी 1893 ई.

(आईना कमालात-ए-इस्लाम पृष्ठ - 592-601)

पवित्र क़ुर्आन के बारे में ऐतराज़ों के संक्षिप्त उत्तर
(हज़रत खलीफ़ा सानी रज़िअल्लाहु अन्हु की क़लम से)

हज़रत मुसलेह मौऊद रज़ि अल्लाह अनहो फरमाते हैं :

"अब मैं इन आरोपों का उत्तर देता हूँ

पहला ऐतराज़ यह किया जाता है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इतने कामों और उपद्रवों में पवित्र क़ुर्आन याद किस तरह रह सकता था।? यह ऐसा प्रश्न है कि इस का एक ही उत्तर हो सकता है और वह यह कि एक घटना को किस तरह झुठलाया जा सकता है। जब हक़ीक़त यह है कि पवित्र क़ुर्आन आपको याद रहा और दिन रात नमाज़ों में सुनाया जाता रहा तो इस का इन्कार किस तरह किया जा सकता है। मुझे याद है एक बार मेरे सामने प्रोफ़ैसर मार्गोलीथि ने यह आरोप लगाया कि इतना बड़ा क़ुरआन किस तरह याद रह गया।? मैंने कहा; मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर तो क़ुरआन उतरा था और आप के सपुर्द सारी दुनिया की इस्लाह का काम किया गया था आप उसे क्यों याद न रखते? मेरे एक लड़के ने ग्यारह साल की उम्र में क़ुरआन याद कर लिया है। और लाखों इन्सान मौजूद हैं जिन्हें सारे का सारा क़ुरआन याद है। जब इतने लोग उसे याद कर सकते हैं तो क्या वही नहीं कर सकता था जिस पर क़ुरआन अवतरित हुआ था?

दूसरा ऐतराज़ यह है कि अरब के लोगों का हाफ़िज़ा (स्मरण शक्ति) अच्छा ना था, क्योंकि वे पुरानी नज़्मों में मतभेद करते हैं। इस के सम्बन्ध में प्रथम तो मैं कहता हूँ कि यह शुतुरमुर्ग वाला उदाहरण है। एक ओर तो कहा जाता है कि अरबों को पुराने क़सीदे याद होते थे जिनमें मतभेद होता था। और दूसरी ओर मार्गोलीथि कहता है कि पुराने ज़माना में क़सीदे थे ही नहीं यूँही बना कर पहले लोगों की ओर सम्बद्ध कर दिए गए हैं। मानो जिस पहलू से इस्लाम पर आरोप लगाना चाहा, वही सामने रख लिया। असल बात यह है कि अरबों के ऐसे हाफ़िज़े होते थे कि मशहूर है एक बादशाह ने ऐलान किया कि जिस शायर को एक लाख शेअर याद न हों वह मेरे पास ना आए। इस पर एक शायर आया और उसने आकर कहा, मैं बादशाह से मिलने के लिए आया हूँ। उसे बताया गया कि बादशाह से मिलने के लिए एक लाख शेअर याद होने ज़रूरी हैं। उसने कहा, बादशाह से जाकर कह दो कि वह एक लाख शेअर इस्लामी ज़माना का सुनना चाहता है या ज़माना जाहिलीयत के, औरतों के सुनना चाहता है या मर्दों के? मैं सब के अशआर सुनाने के लिए तैयार हूँ। यह सुन कर बादशाह शीघ्र बाहर आ गया और आकर कहा। क्या आप अमुक़ शायर हैं? उसने कहा। हाँ मैं वही हूँ। बादशाह ने कहा, इसी लिए मैंने यह ऐलान किया था कि आप मेरे पास आते नहीं थे। मैंने ख़्याल किया कि शायद इस ऐलान पर जोश के कारण आप आ जाऐं। अत: यह कहना ग़लत है कि अरबों के हाफ़िज़े अच्छे न थे। रही ये बात कि शेरों में मतभेद है। इस के सम्बन्ध में याद रखना चाहिए कि वे लोग जो शेअर याद रखते थे वे उन्हें इल्हामी पुस्तक के शेअर समझ कर नहीं याद करते थे बल्कि उनका

अर्थ धारण कर लेते थे परन्तु क़ुरआन को तो ख़ुदा का कलाम समझ कर याद करते थे। इस कारण से इस का एक शब्द भी आगे पीछे न करते थे। फिर जो शेअर वे याद करते थे वे उस्तादों से पढ़ कर याद न करते थे बल्कि जिससे सुनते याद कर लेते और हर व्यक्ति इस योग्य नहीं होता कि सही शब्द ही याद कराए। परन्तु इस्लामी तारीख़ से मालूम होता है कि क़ुरआन लिखने के सम्बन्ध में और क़ुरआन याद करने के सम्बन्ध में ख़ास नियम निर्धारित थे और क़ुरआन याद कराने के लिए चार आदमी निर्धारित थे। और इस में इतनी सावधानी की जाती थी कि एक बार नमाज़ में हज़रत अली ने पढ़ने वाले को लुक़मा दे दिया। तो उन्हें मना किया गया और कहा गया कि आप इस काम के लिए निर्धारित नहीं। अत: पवित्र क़ुर्आन के बारे में इतनी एहतियात की गई थी कि चार आदमी इस काम के लिए निर्धारित थे हालाँकि क़ुरआन जानने वाले हज़ारों थे। इस के मुक़ाबला में शायरों की ओर से कौन से लोग निर्धारित थे, जो शेअर याद कराते थे, इमरा-उलकेस ने किसे निर्धारित किया था कि इस के अशआर लोगों को याद कराया करे। परन्तु क़ुरआन याद कराने के सम्बन्ध में तो उस्ताद के बाद उस्ताद वाली बात चली आ रही है।

तीसरा एक आरोप यह लगाया जाता है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में पूरा क़ुरआन न लिखा गया था। इस का उत्तर यह है कि यह बात ठीक नहीं है। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में अवश्य सारा क़ुरआन लिखा गया। जैसा कि हज़रत उस्मान रज़ि की रिवायत है कि जब कोई हिस्सा अवतरित होता तो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लिखने वालों को बुलाते और फ़रमाते उसे अमुक़ जगह दाख़िल करो। जब यह तारीख़ी सबूत मौजूद है तो फिर यह कहना कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वक़्त पूरा न लिखा गया था, बेवक़ूफ़ी है। रहा यह प्रश्न कि फिर हज़रत अबू बकर रज़ि के ज़माना में क्यों लिखा गया? उस का जवाब यह है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में क़ुरआन इस तरह एक जिल्द में न था जिस तरह अब है। हज़रत उमर रज़ि को यह विचार पैदा हुआ कि लोग ये न समझें कि क़ुरआन महफ़ूज़ नहीं। इसलिए उन्होंने इस बारे में हज़रत अबू बकर रजि से जो शब्द कहे वह यह थे कि اِنِّیْ اَرٰی اَنْ تَأْمُرَ جَمْعَ الْقُرْاٰنِ मैं उचित समझता हूँ कि आप क़ुरआन को एक पुस्तक के रूप में जमा करने का हुक्म दें। यह नहीं कहा कि आप उस को लिखवा लें। फिर हज़रत अबू बकर रजि ने ज़ैद रज़ि को बुला कर कहा कि क़ुरआन जमा करो। अत: फ़रमाया इजम उसे एक जगह जमा कर दो। यह नहीं कहा कि उसे लिख लो। अत: शब्द ख़ुद बता रहे हैं कि उस वक़्त क़ुरआन के पृष्ठों को एक जिल्द में इकट्ठा करने का प्रश्न था लिखने का प्रश्न न था।

चौथा यह आरोप था कि पवित्र क़ुर्आन में कुछ लोगों के सम्बन्ध में اَلَّذِیْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِیْنَ आया है। अत: याद रखना चाहिए कि इस का यह अर्थ नहीं कि लोग क़ुरआन को टुकड़े-टुकड़े करते थे। बल्कि उस का अर्थ यह है कि अल्लाह तआला काफ़िरों पर वैसा ही अज़ाब अवतरित करेगा जैसा उन लोगों पर किया जो क़ुरआन के कुछ हिस्सों का अनुकरण करते हैं और कुछ पर नहीं करते। इस

आयत से साफ़ ज़ाहिर है कि यहां काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों का वर्णन है। और यदि यही अर्थ किए जाएं कि क़ुरआन के टुकड़े-टुकड़े करते थे तो यह भी हमारे लिए लाभदायक है। क्योंकि इस से मालूम हुआ कि क़ुरआन उस वक़्त जमा था। इसलिए दुश्मन उस के टुकड़े-टुकड़े करते थे। मुसलमानों के पास क़ुरआन महफ़ूज़ था परन्तु मुनाफ़िक़ उस के टुकड़े-टुकड़े रखते थे।

पांचवा यह जो कहा जाता है कि चूँकि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अनपढ़ थे इसलिए कातिब जो चाहते लिख देते। इस का उत्तर यह है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पहले से ही इस का प्रबन्ध कर लिया था और वह यह कि जब वह्यी अवतरित होती तो कातिब को कहते लिख लो और चार आदमियों को कहते याद कर लो। इस तरह लिखने वाले की ग़लती याद करने वाले ठीक करा सकते थे और याद करने वालों की ग़लती लिखने वाला बता सकता था। मान लो लिखने वाले ने शब्द ग़लत लिख लिया परन्तु याद करने वाले उस ग़लती के साथ कैसे सहमत हो सकते थे, इस तरह शीघ्र ग़लती पकड़ी जा सकती थी।

छठा यह जो कहा जाता है कि हज़रत उस्मान रज़ि के समय क़ुरआन के पढ़ने में बहुत मतभेद हो गया था। इस का जवाब यह है कि किसी सही रिवायत से यह पता नहीं लगता कि हज़रत उस्मान रज़ि के समय क़ुरआन के सम्बन्ध में मतभेद हो गया था। बल्कि साफ़ लिखा है कि क़िरअत में मतभेद था। और हदीसों से सिद्ध है कि सात क़िरअतों पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ुरआन पढ़ा। चूँकि कुछ क़ौमों के लिए कुछ शब्दों का उच्चारण करना मुश्किल था। इसलिए रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वह्यी के द्वारा बतलाया जाता कि इन शब्दों को इस तरह भी पढ़ सकते हैं। इस बारे में िरवायतों में आता है कि हज़रत अली रज़ि ने वर्णन किया कि हज़रत उस्मान रज़ि ने उन्हें बुला कर कहा कि विभिन्न क़बीलों के लोग कहते हैं कि हमारी क़िरअत सही है और इस पर झगड़ा पैदा हो रहा है इसलिए उस का फ़ैसला होना चाहिए। हज़रत अली रज़ि ने कहा आप ही फ़ैसला कर दें। उन्होंने यह फ़ैसला किया कि चूँकि मुसलमान हो कर अब सब एक हो गए हैं इसलिए एक ही क़िरअत होनी चाहिए और वह क़ुरैश वाली क़िरअत है।

सातवां यदि किरअत में मतभेद न था तो हज़रत अबू बकर रज़ि के वक़्त के क़ुरआन जलाए क्यों गए? इस का जवाब यह है कि यह भी साफ तौर पर ग़लत है। वहां तो यह लिखा है कि हज़रत हफ़सा रज़ी अल्लाह अन्हा के पास हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह अन्हो के ज़माने का क़ुरआन था। वह उनसे मंगवाया गया और कहा गया कि नक़ल करने के बाद वापस कर दें। और फिर वापस कर दिया गया। और जलाए विपरीत क़िरअत वाले क़ुरआन गए थे ताकि िकरअतों का मतभेद न रहे।

आठवां यह जो कहा गया है कि क़ुरआन की असलीयत पर सिर्फ ज़ैद रज़ि की गवाही है, यह भी भूल है। हज़रत अबू बकर रज़ि ने ज़ैद रज़ि के साथ हज़रत उमर रज़ी अल्लाह अन्हो को रखा और मस्जिद के दरवाज़ा पर बिठा दिया। और आदेश दिया कि कोई तहरीर उनके पास ऐसी न लाई जाए जो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की लिखाई हुई न हो और जिसके साथ दो गवाह न हों

जो यह कहें कि हमारे सामने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह लिखवाई थी।

नौवां एक आरोप यह लगाया जाता है कि यदि मतभेद नहीं था तो हज़रत उस्मान रज़ि के समय दोबारा तहक़ीक़ की आवश्यकता क्यों पड़ी। इस का जवाब यह है कि क़िरअत की तहक़ीक़ कराई गई थी इबारतों और सूरतों की तहक़ीक़ नहीं करवाई गई

दसवां इस तरह यह जो कहा गया है कि यदि मतभेद न था तो एक के सिवा बाक़ी कापियां क्यों जलाई गईं। इस का भी वही जवाब है कि विभिन्न क़िरअत वाली कापियां जलाई गई थीं। अत: यह जो कहा जाता है कि हज़रत उस्मान रज़ि के ख़लीफ़ा होने के वक़्त बहुत क़ुरआन थे परन्तु उनके बाद एक रह गया। इस का यही अभिप्राय है कि उन्होंने विभिन्न क़िरअतों को उड़ा दिया और फिर जिन क़ौमों की क़िरअतों को मिटाया गया उन्होंने यह एतराज़ किया।

अत: परिणाम यह निकला कि वर्तमान क़ुरआन वही है जो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में था। इस में कोई मतभेद नहीं है

मुहकमात और मुतशाबिहात

अब मैं मुतशाबिहात के सम्बन्ध में संक्षिप्त रूप से कुछ वर्णन कर देता हूँ। आरोप लगाया जाता है कि क़ुरआन में मुहकमात भी हैं और मुतशाबिहात भी, फिर क़ुरआन का क्या भरोसा रहा?

मूल बात यह है कि क़ुरआन के मुतशाबिहात पर ग़ौर ही नहीं किया गया। सूरत आले इमरान में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

هُوَ الَّذِیۡۤ اَنۡزَلَ عَلَیۡکَ الۡکِتٰبَ مِنۡہُ اٰیٰتٌ مُّحۡکَمٰتٌ ہُنَّ اُمُّ الۡکِتٰبِ وَ اُخَرُ مُتَشٰبِہٰتٌ

(सूरह आले इमरान आयत 8)

कि वह ख़ुदा ही है जिसने इस क़ुरआन को अपने रसूल पर उतारा। इस में कुछ तो मुहकमात हैं जो उम्मुल क़िताब हैं और कुछ मुतशाबेहात हैं।

इस के सम्बन्ध में लोग कहते हैं। हमें क्या मालूम कि कौन सी आयत मुहकम है और कौन सी मुतशाबेह। इस के मुक़ाबला में सूरह हूद में आता है:

کِتٰبٌ اُحۡکِمَتۡ اٰیٰتُہٗ ثُمَّ فُصِّلَتۡ مِنۡ لَّدُنۡ حَکِیۡمٍ خَبِیۡرٍ

(सूरह हूद आयत- 2)

कि यह पुस्तक वह है जिसकी सारी आयतें मुहकमात हैं। इस से ज़ाहिर में ऊपर की बात ग़लत हो गई कि क़ुरआन की कुछ आयतें मुतशाबेह हैं और कुछ मुहकम। तीसरी जगह आता है।

اَللّٰہُ نَزَّلَ اَحۡسَنَ الۡحَدِیۡثِ کِتٰبًا مُّتَشَابِہًا مَّثَانِیَ

(सूरह अज़्ज़ुमर आयत-24)

अर्थात ख़ुदा ही है जिसने बेहतर से बेहतर बात अर्थात वह पुस्तक अवतरित फ़रमाई है जो मुतशाबेह है। इस से ज्ञात होता है कि क़ुरआन की सारी आयतें ही मुतशाबेह हैं। हालाँकि पहले सारी आयतों को

मुहकम क़रार दिया गया था।

इस से साफ़ मालूम हो गया कि मुहकम और मुतशाबेह का अभिप्राय और था जो समझा नहीं गया। और अजीब बात यह है कि मुतशाबेह के अर्थ यह लिए जाते हैं कि जिससे शंकाएं पैदा हों। हालाँकि क़ुरआन मुतशाबेह की यह तफ़सीर करता है।

مَثَانِیَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِیْنَ یَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِیْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰی ذِکْرِ اللّٰهِ (सूरह अज़्ज़ुमर आयत 24)

कि इस के विषय बहुत उच्च हैं और जो लोग इस पुस्तक को समझ कर पढ़ते हैं और अपने रब से डरते हैं। उनके रौंगटे खड़े हो जाते हैं। फिर उनके जिस्म का रोम रोम और उनके दिल अल्लाह तआला के ज़िक्र की ओर झुक जाते हैं। अर्थात उनके दिलों में ख़ुदा तआला की मुहब्बत के चश्मे फूट पड़ते हैं। अब बताओ क्या किसी शक की बात से इस तरह हो सकता है। साफ़ मालूम होता है कि मुतशाबेह का और अर्थ है और वह यह कि मुतशाबेह के अर्थ हैं जो दूसरी से मिलती हो अर्थात मुतशाबेह वह शिक्षा है जो पहली शिक्षाओं से मिलती जुलती हो। जैसे रोज़ा रखना है। यह आदेश अपनी ज़ात में मुतशाबेह है क्योंकि यह शिक्षा पहले भी पाई जाती थी। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है:

کُتِبَ عَلَیْکُمُ الصِّیَامُ کَمَا کُتِبَ عَلَی الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِکُمْ

(सूरह अल्बक़र: आयत 184)

अत: केवल रोज़ा रखने का आदेश मुतशाबेह है। इसी तरह क़ुर्बानियों के सम्बन्ध में अल्लाह तआला फ़रमाता है

وَلِکُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَکًا

(सूरह अल्हज्ज आयत-35)

अर्थात हर क़ौम के लिए हमने क़ुर्बानी का एक तरीक़ा निर्धारित किया है। अत: क़ुर्बानी का हुक्म भी मुतशाबेह है। वास्तव में क़ुरआन ने इस में उन लोगों को जवाब दिया है जिन्होंने यह कहा था कि क़ुरआन ने दूसरी पुस्तकों से चोरी करके सब कुछ प्रस्तुत कर दिया है। ख़ुदा तआला फ़रमाता है:

هُوَالَّذِیْٓ اَنْزَلَ عَلَیْکَ الْکِتٰبَ مِنْهُ اٰیٰتٌ مُّحْکَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ الْکِتٰبِ وَاُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ

कि यह पुस्तक ऐसी है जिसमें कुछ शिक्षाएं तो नवीन हैं और कुछ शिक्षाएं ऐसी हैं जो निसन्देह पिछली शिक्षाओं से मिलनी चाहिऐं। जैसे पहले नबियों ने कहा सच बोला करो। क्या क़ुरआन यह कहता है कि सच न बोला करो। बल्कि झूठ बोला करो? अत: फ़रमाया क़ुरआन में कुछ शिक्षाएं ऐसी हैं जो

पहली शिक्षाओं से मिलती हैं। परन्तु आगे फ़रमाता है:

فَاَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُوْنَ مَاتَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَآءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَآءَ تَاْوِيْلِهٖ

(सूरह आले इमरान आयत 8)

बेवक़ूफ़ लोग नवीन शिक्षाओं पर नज़र नहीं डालते और पहली शिक्षाओं से मिलती जलती शिक्षाओं को देखकर कहते हैं कि क़ुरआन ने यह नक़ल की है। वे केवल उपद्रव फैलाने के उद्देश्य से और इस पुस्तक को इस की वास्तविकता से फेर देने के लिए ऐसा करते हैं:

وَمَا يَعْلَمُ تَاْوِيْلَهٗٓ اِلَّا اللّٰهُ

(सूरह आले इमरान आयत 8)

हालाँकि उनकी हक़ीक़त अल्लाह तआला ही जानता है और वही समझ सकता है कि कितनी शिक्षा दोबारा अवतरित करनी ज़रूरी है। इन्सान के हाथ में उसने यह काम नहीं रखा। क्योंकि यद्यपि वह शिक्षा पहले अवतरित हो चुकी होती है परन्तु फिर भी इस की वह हिस्सा जो भविष्य के लिए आवश्यक होता है। उस का फ़ैसला ख़ुदा तआला ही कर सकता है। कोई और नहीं कर सकता। और या फिर ख़ुदा तआला के ज्ञान देने के बाद वे लोग जो ख़ुदा तआला की पुस्तकों का मूल ज्ञान रखने वाले हैं समझ सकते हैं कि किस सीमा तक इस शिक्षा को क़ायम रखा जाना ज़रूरी था और किसी बात को क्यों बदला गया?

इस की और सहीह व्याख्यों भी हो सकती हैं। परन्तु उनमें मुहकम और मुतशाबेह को निर्धारित नहीं किया जा सकता। एक ही आयत एक वक़्त में मुहकम और एक वक़्त में मुतशाबेह हो जाती है। अर्थात जो आयत किसी की समझ में आ गई वह मुहकम हो गई और जो न आई मुतशाबेह हो गई परन्तु फिर मतभेद हो सकता है। हो सकता है कि एक व्यक्ति एक अर्थ की दृष्टि से किसी आयत को मुहकम क़रार दे दे और दूसरा उसे उचित न समझते हुए उसे मुतशाबेह कह दे परन्तु इन अर्थों में मुहकम आयतें बिलकुल ज़ाहिर हो जाती हैं। अर्थात वे कुरआन की शिक्षाएं जो पहली पुस्तकों से अधिक हैं वे सब मुहकम हैं और मुतशाबेह।

सारे क़ुरआन को मुहकम और सारे क़ुरआन को मुतशाबेह क्यों कहा गया है?

बाक़ी रहा यह प्रश्न कि फिर एक जगह सारे क़ुरआन को मुहकम और दूसरी जगह सारे क़ुरआन को मुतशाबेह क्यों कहा गया है। तो उस के सम्बन्ध में याद रखना चाहिए कि जैसा कि मैं बता चुका हूँ पवित्र क़ुर्आन की परिभाषा में मुहकम शिक्षा वही है जिसमें पवित्र क़ुर्आन ने नवीनीकरण किया है। और जिस बात में वह पहली पुस्तकों से मिलता है वह मुतशाबेह है। परन्तु एक दृष्टि से सारा ही क़ुरआन मुहकम है। क्योंकि उसूलन किसी शिक्षा को देखते हुए उस के किसी एक टुकड़े को नहीं

बल्कि सम्पूर्ण को देखते हैं। और आदेशों की विभिन्न बातों को सामूहिक रूप से देखा जाए तो इस्लामी शिक्षा बिलकुल अलग है। शिक्षा के किसी हिस्सा में भी उसने सुधार को तर्क नहीं किया और वे पहली पुस्तकों के बिलकुल मुशाबेह नहीं है, इसलिए वह सब मुहकम हैं। परन्तु इसी तरह चूँकि शरीयत के तमाम नियमों का पहली पुस्तकों में पहले लोगों के स्तर के अनुसार अवतरित होना भी ज़रूरी था ताकि पहले ज़माना के लोग भी अपनी अपनी सीमा में सम्पूर्णता प्राप्त करें इसलिए हर प्रकार के आदेश जो पवित्र क़ुर्आन में हैं किसी न किसी रूप में पहली पुस्तकों में भी मौजूद हैं इस दृष्टि से पवित्र क़ुर्आन सब का सब मुतशाबेह है। नमाज़ भी पहले धर्मों में है। रोज़ा भी है, हज भी है, ज़कात भी है और इस समानता को देखकर कुछ लोग धोखे में पड़ जाते हैं और विचार करते हैं कि पवित्र क़ुर्आन के अवतरण का फिर क्या लाभ हुआ। ईसाईयों में से "यनाबीयुल इस्लाम" इत्यादि पुस्तकों के लेखक इसी गिरोह में शामिल हैं जिन्होंने पवित्र क़ुर्आन की दूसरी पुस्तकों से मुशाबहत सिद्ध करके क़ुरआन को झूठा क़रार दिया है। हालाँकि पवित्र क़ुर्आन ने पहले से इस आरोप का वर्णन करके उस का निहायत स्पष्ट रूप से जवाब दे दिया है। सच्चाई यह है कि पवित्र क़ुर्आन ने यह एक ज़बरदस्त हक़ीक़त बताई है कि हर एक आसमानी ग्रन्थ के लिए ज़रूरी है कि उस के अंदर कुछ मुहकम हो और कुछ मुतशाबेह। मुतशाबेह इसलिए कि जो ग्रन्थ पहली शिक्षाओं से पूर्णतया जुदा हो जाता है वह ख़ुदा तआला की ओर से नहीं हो सकता क्योंकि उस के यह अर्थ होंगे कि इस से पहले कोई शख़्स ख़ुदा का चुना हुआ ही नहीं और ख़ुदा तआला ने किसी को हिदायत दी ही नहीं, और यह झूठ होगा। और मुहकम इसलिए कि यदि वह कोई नवीन ख़ूबी दुनिया के सामने प्रस्तुत नहीं करता तो इस के आने की आवश्यकता क्या है, पहली शिक्षा तो मौजूद ही थी और कौन है जो इस असल की ख़ूबी का इन्कार कर सके या उस की सच्चाई को रद्द कर सके।

मुफ़स्सिरीन ने मुहकम और मुतशाबेह की व्याख्या में बहुत कुछ ज़ोर लगाया है। परन्तु इस वास्तविकता को न समझने के कारण उन्होंने बहुत कुछ धोखा खाया है।

अब चूँकि सर्दी बढ़ रही है और बादल भी घिरे हुए हैं इसलिए मैं इसी पर अपनी तक़रीर को समाप्त करता हूँ और अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ कि वह आप लोगों को पवित्र क़ुर्आन के समझने और उस पर अनुकरण करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन

(इस तक़रीर के बाद हुज़ूर ने सारे लोगों के साथ मिलकर दुआ की और फिर ख़ुदा तआला के समक्ष इस बात पर शुक्र का सज्दा किया कि उसने हुज़ूर को सेहत की कमज़ोरी के बावजूद जलसा में शामिल हो कर तक़रीर करने और फिर सब के साथ मिलकर दुआ करने की तौफ़ीक़ अता की। फ़ल्हमदो लिल्लाह अला ज़ालिक।

(क़ुर्आन की विशेषताएं पृष्ठ 35-47)

* * *

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk
Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road
Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kachegud
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

Fawad Anas Ahmed
GOLDEN GROUP REAL ESTATE

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H.O & FACTORY : 20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

अरबईन अतफ़ाल

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कुछ हदीसें

अनुवादक- इब्नुल मेहदी लईक एम ए

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अज़ हज़रत मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब रजियल्लाहो तआला अन्हो लिखते हैं :

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि : "जो व्यक्ति मेरी उम्मत को दीन समझाने के लिए चालीस हदीसें याद कर ले अल्लाह तआला उसे क़यामत के दिन फ़ुक़्हा (ज्ञानियों) में उठाएगा और मैं उसकी शफ़ाअत (सिफ़ारिश) करूंगा और उसके हक में गवाही दूंगा।"

इस कलामे मुक़द्दस पर अमल करके मैंने भी अब चालीस हदीसों के मजमूआ का इस तरह संकलन किया है कि इनका समझना और याद करना जन साधारण बल्कि औरतों तथा छोटे बच्चों के लिए भी आसान हो। अर्थात अधिकतर हदीसें केवल दो शब्दों की हैं और जो तीन शब्दों की भी हैं उनमें एक शब्द ऐसा मौजूद है जिसे हर उर्दू बोलने वाला आसानी से समझ सकता है।

ऊपरलिखित इरशाद नबवी के अतिरिक्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक ख़ुशख़बरी अरबईन जमा करने वालों के लिए यह है:- "मन त र क अर ब ई न हदीसन बा द मौतेही फ़ हो व र फ़ीक़ी फ़िल जन्नते।" अर्थात "वह जिस मे अपने मरने के बाद चालीस हदीसें छोड़ीं वह जन्नत में मेरा साथी होगा।" इस लिए मैंने इन हदीसों को पुस्तकीय रूप में प्रकाशित कर दिया है। अल्लाह तआला क़बूल करे और इस मजमू अ को लोगों के लिए लाभदायक बनाए। आमीन!

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحیم
نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیم

अरबईन अज़ कलाम हुज़ूर सय्यदुल
मुरसलीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

(1)

اَلدِّیۡنُ النَّصِیۡحَۃُ

अद्दीनुन् नसीहतो

(दीन का ख़ुलासा ख़ैर ख़वाही है।)

ख़ैर ख़वाही चाहे लोगों की हो, चाहे रसूल की चाहे ख़ुदा की। अर्थात जो सिलसिला ख़ुदा ने क़ायम किया

है उस की तरक़्क़ी में लगे रहना और तबलीग़ में रसूल की मदद करना लोगों पर शफ़क़त करना अर्थात कृपा करना।

(2)

اِجْتَنِبُوا الْغَضَبَ

इज्तनेबुल ग़ज़ब

(सख़्त ग़ुस्से से बचो)

क्योंकि वह अधिकतर गाली-गलोच, फ़साद या क़तल तक का कारण होता है।

(3)

اَدُّوْا زَكٰوتَكُمْ

अद्दू ज़कात कुम

(तुम अपनी ज़कात अदा किया करो।)

क्योंकि ज़कात ग़रीबों की मदद है और माल (धन) को पाक करती है।

(4)

اِحْفَظْ لِسَانَكَ

इहफ़ज़ लिसानक

(तू अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त (रक्षा) कर।)

बुहतान (इल्ज़ाम) झूठ और ग़ीबत (पीठ पीछे दूसरों की बातें करने) से। लड़ाई और फ़साद की बातों से। बेहूदह और गन्दी बातों से।

(5)

اَرْحَامُكُمْ اَرْحَامُكُمْ

अरहामो कुम अरहामो कुम

(तुम्हारे रिश्तेदार आख़िर तुम्हारे रिश्तेदार ही हैं।)

इसलिए उनकी दिलदारी, अच्छे सुलूक, और मदद, दूसरों से ज़्यादा चाहिऐ।

(6)

اَرْشِدُوْا اَخَاكُمْ

अरशेदू अख़ाकुम

(अपने भाई को हिदायत (नसीहत) करो)

अर्थात तालीम व तरबिय्यत या नेक बातों और उपदेशों द्वारा उनकी भलाई में लगे रहो ताकि वह नेक बन जाए।

(7)

اِشْفَعُوْا تُوْجَرُوْا

इशफ़ऊ तूजरू

(सफ़ारिश किया करो तुमको सफ़ारिश का भी अजर मिलेगा।)

दुनिया में कुछ काम सफ़ारिश से भी चलते हैं। यदि किसी मुस्तहिक़ (हक़दार) की सफ़ारिश करने से उसे लाभ पहुँच सकता है तो अवश्य करनी चाहिए पर शर्त है कि किसी पर ज़ुल्म न हो।

(8)

اَسْلِمْ تَسْلَمْ

असलिम तसलम

(इस्लाम ला तो तू हर ख़राबी, बुराई और नुक़सान से
सुरक्षित हो जाएगा)

इसी कारण इस्लाम सलामती का मज़हब कहलाता है।

(9)

اَطِعْ اَبَاكَ

अतिअ अबाक

(अपने बाप की इताअत कर)

बाप की इताअत संतान के लिए न केवल ख़ुश क़िस्मती है बल्कि सच्ची भलाई चाहने वाला और अनुभवी होने के कारण भी उसकी इताअत (आज्ञापालन) करना लाभदायक है।

(10)

اِعْتَكِفْ وَصُمْ

एतकिफ़ व सुम

(एतकाफ़ में बैठ और साथ ही रोज़ा भी रख)

अर्थात एतकाफ रोज़ों के बिना नहीं हो सकता और एतकाफ़ बैठने वाले का रोज़ेदार होना ज़रूरी है। वरना एतकाफ़ बेकार है।

(11)

اِعْلِنُوا النِّكَاحَ

इअलेनु अन्निकाह

(निकाह एलान के साथ किया करो)

अर्थात सब छुप कर किए जाने वाले निकाह नाजाइज़ हैं।

(12)

اَكْرِمِ الشَّعْرَ

अकरेमि श्शअर

(बालों की इज़्ज़त कर)

अर्थात इनको पाक और साफ़ रख और कंघी का प्रयोग कर। दूसरे यह कि जब लड़के की दाढ़ी मूंछ निकल आए तो उसके साथ बच्चों की तरह का सलूक न करे। तीसरे यह कि कोई सफ़ेद बालों वाला आदमी हो तो उसकी बालों की वजह से उसका आदर कर।

(13)

اَلْاَعْمَالُ بِالْخَوَاتِيْمِ

अल आमालो बिल ख़वातीमे

(अमलों का दारो मदार अंजाम है।)

यदि अंजाम अच्छा हुआ तो समझो कि आमाल भी क़बूल हो गए। वरना बेकार हैं।

(14)

اُوْصِيْكُمْ بِالْجَارِ

ऊसीकुम बिल जारे

(मैं तुम को हमसाए (पड़ोसी) से नेक सलूक की वसिय्यत करता हूँ।)

सभ्यता तथा शान्ति की स्थापना का यह भी एक बड़ा भारी नियम है।

(15)

اَكْرِمُوْا اَوْلَادَكُمْ

अकरेमू औलादकुम

(अपनी औलाद की इज़्ज़त करो)

ताकि उन मैं ग़ैरत पैदा हो और वह बुरी बातों और बुरे कामों से बचे रहें। सदा तू तकार करके बच्चों से बात करना ठीक नहीं।

(16)

اَلْاَمَانَةُ عِزٌّ

अल अमानतो इज़्ज़ुन

(अमानतदारी इज़्ज़त है)

अमीन (अमानतदार) की दुनिया में इतनी इज़्ज़त है कि हर रसूल (नबी) ने अपनी क़ौम को "इन्नी ल कुम रसूलुनल अमीन" कह कर पहले अपनी इज़्ज़त तो मनवा लिया फिर उन को सत्य का सन्देश दिया।

(17)

اَلْاَيْمَنُ فَالْاَيْمَنُ

अल ऐमनो फ़ल ऐमनो

(दाईं ओर वाला दाईं ओर वाला ही है।)

सभा में कुछ अधिकार दाईं ओर वालों के विशेष होते हैं, उनका ध्यान रखें। उदाहरणत: खाना बांटना, सुझाव लेना आदि।

(18)

بَجِّلُوا الْمَشَايِخَ

बज्जेलुल मशाइख़

(बुजुर्गों का आदर करो)

क्योंकि उनका ज्ञान और अनुभव नौजवानों से अधिक होता है।

(19)

تَعَلَّمُوا الْيَقِينَ

तअल्लमुल यक़ीन

(यक़ीन को सीखो)

सारे कर्मों का आधार यक़ीन पर है। और ईमान की अन्तिम मंन्ज़िल भी यक़ीन ही है वरना बेयक़ीन इन्सान अपनी उम्र फ़ज़ूल बातों में व्यतीत कर देता है और कर्मों तथा ईमान के शानदार परिणाम से वंचित रहता है।

(20)

تَهَادُّوْا تَحَابُّوْا

तहाद्यू तहाब्बू

(एक दूसरे को उपहार दिया करो ताकि आपस में तुम्हारा प्रेम बढ़े।)

आपस में प्रेम बढ़ाने का सब से अधिक प्रभाविक तरीका यही है।

* * *

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES

INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ○
(سورہ بنی اسرائیل آیت 31)

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

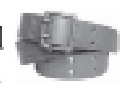

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا
(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
LUCKY BATTERY CENTRE
BATTERY & DIGITAL INVERTER
Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com
Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا
(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
Prop.
Sk. Riyazuddin
Moblie: 9437188786
9556122405
KING TENT HOUSE
At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ
(النحل:11)
Prop : Sk. Ishaque
Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653
FFT Fruits
FAIZAN FRUITS TRADERS
Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045
PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad
Mobile
09937238938
محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں
PRAN
MANGO JUICEPAK
Marie
RUKSAR AGENCY
Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.
Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S
REHAN INTERNATIONAL
WE ARE ON
snapdeal
flipkart
amazon.com
Paytm
Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com
We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com
DECO
DL
LEATHERS
Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture
Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3